७- दक्षिण में मनमाड से कुछ दूर चाँदवड के पास रेणुका तीर्थ नामक सरोवर है। उसके समीप ही रेणुकादेवी का मन्दिर है। कहा जाता है कि परशुरामजी की माता रेणुकाजी ने यहाँ तप किया था।

८- बंगलौर-पूना लाइन पर धारवाड़ स्टेशन से कुछ दूर परशुरामजी का एक प्राचीन मन्दिर है। कहा जाता है कि यहाँ महर्षि जमदग्नि का आश्रम था। पर्वत-शिखर पर परशुरामजी की माता रेणुकाजी का तपस्या-स्थल है। यहाँ दोनों नवरात्रों में विशेष समारोह के साथ अर्चा-महोत्सव होता है।

श्री नन्दकिशोर शर्मा नैयायिक

जयप्रकाश शर्मा
पाण्डुलिपि विशेषज्ञ
वैदिक हैरिटेज एवं पाण्डुलिपि शोध संस्थान, जयपुर

श्री नैयायिक जी के पितृचरण श्री कल्याणबख्श जी शर्मा जयपुर के निवासी थे तथा विद्वत्समाज में दुर्गापाठी ब्राह्मण के रूप में विख्यात थे। श्री नैयायिक जी का जन्म वैशाख शुक्ला १० विक्रम संवत् १९५० तदनुसार १४ मई, १८९४ को जयपुर में हुआ था। आपकी शिक्षा जयपुर में ही सम्पन्न हुई। आपने पण्डित कन्हैयालाल जी न्यायाचार्य की सेवा में रहकर न्याय विषय से शास्त्री परीक्षा संवत् १९७३ में तथा न्यायाचार्य संवत् १९७६ में उत्तीर्ण की। आपने १६ दिसम्बर १९२० से असिस्टेन्ट प्रोफेसर न्याय के पद पर कार्य करना प्रारम्भ किया। दिनांक १ अप्रेल १९४३ को आप न्यायशास्त्र के प्राध्यापक पद पर पदोन्नत हुए।आपके शिष्यों में श्री स्वरूपनारायण शास्त्री दाधीच, श्री हरिकृष्ण शर्मा गोस्वामी, श्री रूपनारायण शर्मा न्यायाचार्य, श्री गोविन्दनारायण शर्मा न्यायाचार्य, श्री कृष्णदत्त शर्मा न्यायाचार्य, श्री दीनानाथ त्रिवेदी धादि के नाम उरलेखनीय हैं।आप मोदमन्दिर धर्मसभा के सम्मानित सदस्य रहे हैं और अन्तिम समय तक इस पद पर कार्य करते रहे है। आपका निधन मार्गशीर्ष शुक्ला १३ विक्रमाब्द २०२३ को जयपुर में ही हुआ। आपके निधन से न्याय शास्त्र को अपूरणीय क्षति हुई। आप सरल एवं गम्भीर प्रकृति के विद्वान थे। आपका रचनात्मक कार्य अनुपलब्ध है।